दलित साहित्य में सामाजिक यथार्थ और अस्मिता का प्रश्न

दीपक, शोधार्थी, हिंदी विभाग, NIILM विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

शोध-सार

दलित साहित्य हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण धारा है, जो भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता, शोषण, उत्पीड़न और अस्पृश्यता जैसी समस्याओं को अभिव्यक्त करती है। यह साहित्य केवल दलित समुदाय के जीवन-संघर्षों का चित्रण नहीं करता, बल्कि सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त वर्णवादी मानसिकता और जातिगत वर्चस्व को चुनौती देते हुए समानता, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा की स्थापना का प्रयास भी करता है। दलित साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण जीवन के वास्तविक अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष और प्रतिरोध के माध्यम से सामने आता है। इसमें दलित समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थितियों का यथार्थपरक वर्णन मिलता है।

अस्मिता का प्रश्न दलित साहित्य का केंद्रीय आधार है। यह साहित्य दलित समाज को सदियों से थोपी गई हीनता और उपेक्षा की मानसिकता से मुक्त कर आत्मसम्मान, आत्मचेतना और स्वाभिमान की भावना विकसित करने का माध्यम बनता है। दलित रचनाकार अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सामूहिक पीड़ा और सामाजिक चेतना को स्वर प्रदान करते हैं। इस साहित्य में डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों, समानता, शिक्षा, अधिकार और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य दलित साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ एवं अस्मिता के विविध आयामों का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि किस प्रकार दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन, आत्मपहचान और मानवीय अधिकारों की चेतना को विकसित करता है। इस प्रकार दलित साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति न होकर सामाजिक परिवर्तन और प्रतिरोध का सशक्त माध्यम भी है।

बीज शब्द: दलित साहित्य, सामाजिक यथार्थ, अस्मिता, जातिगत भेदभाव, सामाजिक शोषण, आत्मसम्मान, दलित चेतना, सामाजिक न्याय, प्रतिरोध, डॉ. भीमराव आंबेडकर, समानता एवं मानवीय अधिकार।

SEA SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY